अध्याय 22

अब्राहम के विश्वास की परीक्षा

जैसे अध्याय 22 में दर्ज यह भाग पुराने नियम के सबसे प्रचलित मुख्य भागों में से एक है। हालाँकि, यह भाग पाठकों को कठिनाई से समझ आने वाले भागों में से भी एक है। अब्राहम ने अंत में, लम्बे समय से प्रतिक्षित, वायदे की सन्तान इसहाक को प्राप्त किया। फिर, परमेश्वर ने, उसके विश्वास की परीक्षा के लिए, अपने पुत्र को परमेश्वर को लौटाने के लिए कहा। अब्राहम परीक्षा में सफल हुआ और परमेश्वर ने उसे उसके पुत्र के प्राण लेने से रोका (22:1-14)। यह अध्याय अब्राहम को कई वंश प्राप्त होने वाले वायदे के नवीकरण (22:15-19) और उसके भाई नहोर की संतान के बारे में टिप्पणी के साथ समाप्त होता है (22:20-24)।

अब्राहम की विश्वासयोग्यता (22:1-14)

इसहाक को बलिदान करने की आज्ञा (22:1-8)

[1]इन बातों के पश्चात् ऐसा हुआ कि परमेश्वर ने अब्राहम से यह कहकर उसकी परीक्षा की, "हे अब्राहम!" उसने कहा, "देख मैं यहाँ हूँ।" [2]उसने कहा, अपने पुत्र को अर्थात अपने एकलौते पुत्र इसहाक को जिस से तू प्रेम रखता है, संग लेकर मोरिय्याह देश में चला जा; और वहाँ उसको एक पहाड़ के ऊपर जो तुझे बताऊँगा होमबलि करके चढ़ा। [3]अतः अब्राहम सबेरे तड़के उठा और अपने गदहे पर काठी कसकर अपने दो सेवक, और अपने पुत्र इसहाक को संग लिया, और होमबलि के लिये लकड़ी चीर ली; तब निकल कर उस स्थान की ओर चला, जिसकी चर्चा परमेश्वर ने उससे की थी। [4]तीसरे दिन अब्राहम ने आँख उठाकर उस स्थान को दूर से देखा; [5]और उसने अपने सेवकों से कहा, "गदहे के पास यहीं ठहरे रहो; यह लड़का और मैं वहाँ तक जाकर, और दण्डवत् करके, फिर तुम्हारे पास लौट आएँगे। [6]तब अब्राहम ने होमबलि की लकड़ी ले अपने पुत्र इसहाक पर लादी, और आग और छुरी को अपने हाथ में लिया; और वे दोनों एक साथ चल पड़े। [7]इसहाक ने अपने पिता अब्राहम से कहा, "हे मेरे पिता," उसने कहा, "हे मेरे पुत्र क्या बात है ?" उसने कहा, "देख, आग और लकड़ी तो हैं पर होमबलि के लिये भेड़ कहाँ है?" [8]अब्राहम ने कहा, "हे मेरे पुत्र परमेश्वर होमबलि की भेड़ का उपाय आप ही करेगा।" और वे दोनों संग संग आगे चलते गए।

परमेश्वर का अब्राहम को एक मनुष्य का बलिदान चढ़ाने को कहने का विचार समकालीन पाठकों को पसंद नहीं आएगा। यह कार्य इस व्यक्ति को सौंपना, जिसने अपना वैधपुत्र प्राप्त करने के लिए लम्बे समय तक इंतज़ार किया, एक निर्दयता की बात लगती है। कैसे हो सकता है कि एक अच्छा परमेश्वर, जिसने एक वृद्ध दंपत्ति के बीच हस्तक्षेप किया और उन्हें गर्भधान और इसहाक के जन्म के द्वारा आशा दी, कुलपति से उसके वायदे के पुत्र का प्राण लेने को कैसे कह सकता है?

कैसे अब्राहम ने, इतनी जल्दी बिना संकोच और सवाल किए अपने पुत्र को चढ़ाने की परमेश्वर की आज्ञा को माना? चूंकि वह इसहाक से इतना प्रेम करता था, इसलिए उसने उसके प्राण के लिए निवेदन क्यों नहीं किया जैसे उसने लूत और सदोम और अमोरा के लिए किया था? यह सब बहुत मुश्किल सवाल हैं और वचन हमें इनका उत्तर प्रदान नहीं करता। हालांकि, कथा एक समाधान पर संकेत करता है, और कई समान लेख के अंश परमेश्वर का व्यक्तियों और इस्राएल की जातियों की परीक्षा लेने को दर्शाती हैं जो गलत धारणाओं को खत्म करने में मदद करती हैं। इसके अलावा, नया नियम भी परमेश्वर और अब्राहम के बारे में झूठे विचारों को दूर करने में सहायता करता है।

आयात 1. निम्नलिखित परिचय से अध्याय की शुरुआत होती है: **अब वह इन बातों के बाद के बारे में आया था।** पिछले अध्याय में बताई गयी घटनाओं के बाद कितना समय हो गया था, यह हमें बताया नहीं गया है; लेकिन इसहाक के जन्म और अबीमेलेक के साथ भेंट के बाद से समय की एक लंबी अवधि बीत चुकी थी। इसहाक कम से कम इस समय तक अपने किशोर अवस्था में प्रवेश कर चुका था; और यद्यपि पिछले कुछ समय से, परमेश्वर ने अब्राहम से बात न की थी, उसकी प्रतिक्रिया परमेश्वर के प्रति तत्कालिक थी: **"मैं यहाँ हूँ।"**

परमेश्वर ने अब्राहम की परीक्षा ली: इस का कारण ही आज्ञा का उद्देश्य बताता है। यह वचन कुछ को उलझन में डाल देता है क्योंकि के.जे.वी. इस आयत में इब्रानी पद को נָסָה *(नसह)* में अनुवाद करती है, और कहीं और "भरमाने" के रूप में। यह अनुवाद पहली बार में यह धारणा देता है कि परमेश्वर अब्राहम को पाप करने को भरमाने की कोशिश कर रहा था मगर बाइबल में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि परमेश्वर कभी भी मनुष्य को पाप करने के लिये भरमा नहीं सकता (याकूब 1:13)। वही इब्रानी मूल शब्द जो अब्राहम के लिये परमेश्वर की परीक्षा को प्रस्तुत करता है अक्सर परीक्षा लेना और लोगों को साबित करने के विषय में प्रयोग किया जाता है (देखे निर्गमन 15:25; 16:4; 20:20; व्यव. 8:16; 13:3; न्यायियों 2:22; 3:1, 4)।

परीक्षा का एक संभावित कारण राजा हिजकिय्याह के विवरण में दिया गया है: परमेश्वर ने उसे "अकेला छोड़ दिया था सिर्फ़ उसकी परीक्षा लेने, ताकि वह जाने की उसके मन में क्या है" (2 इतिहास 32:31; देखें व्यव. 8:2; भजन 26:2)। परीक्षण करके, परमेश्वर अपने लोगों के सच्चे इरादे और मंशा को उजागर

करते है। इस प्रकिया के द्वारा,[1] उसने उनमें वांछनीय चरित्र की विशेषताएँ और गुण, विशेष रूप से एक गहरे विश्वास को विकसित करने की आशा व्यक्त की। अब्राहम के मामले में, परमेश्वर यह देखना चाहता था कि क्या इन सालों में कुलपति का विश्वास और चरित्र अंतिम परीक्षण में जीवित रह पाएगा या नहीं। क्या वह अपने मानवीय कारणों, जैसे इसहाक के लिए अपने गहरे प्रेम और उसके भविष्य से संबंधित अपने सपनों को महत्व न देते हुए परमेश्वर की इच्छा को महत्व देगा? क्या उसने परमेश्वर पर इतना भरोसा किया है, कि वह इसहाक को मानव बलिदान के रूप में चढ़ा दिया (इब्रा. 11:17-19)?

आयत 2. दिव्य आज्ञा जो परमेश्वर ने अब्राहम को दी थी वह विवेकशील समझ को चुनौती देती है। यह आज्ञा आदेशात्मक वाक्य से शुरू होती है जहाँ इसहाक के लिये तीन संकेत दिए गए जो सामान्य से विशेष कि ओर बढ़ते हैः "**अपने पुत्र को अर्थात अपने एकलौते पुत्र इसहाक को जिस से तू प्रेम रखता है।**"

יָחִיד *(याचिद)* "सिर्फ़" जो इब्री शब्द है, इसका अर्थ "सिर्फ़ एक, ख़ास" लिया जा सकता है, "अद्वितीय और अमूल्य" के संदर्भ में।[2] *याचिद*, μονογενής *(मोनोगेनेस)* युनानी शब्द है, उसके तुल्य है, जिसका प्रयोग इब्रानियों 11:17 में इसहाक के उल्लेख के लिए किया गया है। उस विषय में, एन ए एस बी ने उस शब्द का अनुवाद "एकलौता पुत्र" किया है। हालांकि, यह अनुवाद सही नहीं है क्योंकि यह उस अनुवाद को बनाए रखे हुए है जो जेरोस के साथ लेटीन वुल्गेट (ई. 395) में शुरू हुई और जो उसके पश्चात के.जे.वी के अनुवादकों द्वारा अपनाई गयी (ई. 1611)। इसहाक के लिये, "एकलौते पुत्र" का शाब्दिक संदर्भ गलत है, क्योंकि अब्राहम के दो पुत्र थे: इशमाएल और इसहाक। इसके अलावा इसहाक "एकमात्र, अद्वितीय पुत्र"[3] था जिसका जन्म वायदे के कारण, यद्यपि उसके माता पिता की प्रसव उम्र ढल चुकी थी, हुआ। यह जन्म एक अपौरुषेय जन्म था।

ज्योंही परमेश्वर अपनी दिव्य आज्ञा को जारी रखता है, वह अब्राहम को यह निर्देश देता है कि, **"[इसहाक] को संग लेकर मोरिय्याह देश में चला जा; और वहाँ उसको एक पहाड़ के ऊपर जो मैं तुझे बताऊँगा होमबलि करके चढ़ा।"** "मोरिय्याह देश" वाक्यांश हमें पूरी बाइबल में कहीं और नहीं मिलता। पुराने नियम में मोरिय्याह का ज़िक्र सिर्फ़ एक और जगह पर किया गया है, 2 इतिहास 3:1, जो इस प्रकार है, "सुलैमान ने यरूशलेम में मोरिय्याह नामक पहाड़ पर उसी स्थान में यहोवा का भवन बनाना आरम्भ किया, जिसे उसके पिता दाऊद न दर्शन पाकर ओर्नोन के खलिहान में तैयार किया था।" बाद के समय में, "मोरिय्याह" नाम एक विशेष पहाड़ को संबोधित करने के लिए इस्तेमाल किया जाने लगा - "यहोवा का पहाड़" (22:14) - नाकी किसी साधारण से देश को। इस्राएलियों ने यरूशलेम में एक निश्चित जगह का नाम "मोरिय्याह पर्वत" रखा इस विश्वास पर की वहाँ इसहाक के बलिदान की घटना हुई थी। इसी स्थान पर, दाऊद ने परमेश्वर को बलिदान चढ़ाए (2 शमूएल 24:16-25); 1 इतिहास 21:16-26), और सुलैमान ने परमेश्वर का मंदिर बनाया था।[4]

परमेश्वर की आज्ञा, अब्राहम के लिए कितनी कठिन रही होगी, यह उनके दिव्य निदेश में दिखाई देती है, कि उसे इसहाक को "होमबलि" עֹלָה *(ओलाह)* की नाई चढ़ाना ही होगा। इसके पश्चात् इस्राएली नियमों के अनुसार *ओलाह* को एक ऐसा बलिदान बना दिया जिसमें वेदी पर की वस्तु को पूरी तरह ग्रहण किया जायेगा (बगैर चमड़े के)।[5] जिसमें से ऐसी सुगंध उत्पन्न होती थी जो परमेश्वर को भाती थी (8:21; लैव्य. 1:9) क्योंकि यह ऐसे जीवन का प्रतीक थी जो उसके प्रति समर्पित जीवन था। समस्या तो इस बात पर उत्पन्न होती है कि यहोवा को मनुष्यों के बलिदानों से घृणा होती थी। बाद में, उसने अपने लोगों को अन्य जातियों के समान अपने देवी देवताओं की उपासना के लिये अपनी संतानों को होमबलि करके चढ़ाने से निषिद्ध किया (लैव्य. 18:21; 20:1-5; व्यव. 12:31; 18:10)।

परमेश्वर के मनुष्यों के बलिदान के प्रति घृणा के बारे में, अब्राहम को कितना ज्ञान था? हमें इस बारे में वचन कुछ नहीं बताता। हालांकि, इसहाक - वायदे की संतान - को ले जाकर आग में डाल कर होमबलि की नाई चढ़ाने की आज्ञा सुनकर ही वह भीतर तक काँप गया होगा। यह कुलपति के विश्वास की सबसे कठिन परीक्षा बन गई।

प्रश्न में परमेश्वर का स्वभाव और चरित्र भी लिप्त है। इतने वर्षों के पश्चात, अब्राहम परमेश्वर को बहुत अच्छी रीति से जान गया था और जानता था की वह भला और अनुग्रहकारी है जो कुछ भी गुप्त रीती से नहीं करता। इसलिये, यहाँ तक की वह नहीं समझ पाया था की इस आज्ञा का क्या कारण है फिर भी उसने यह विश्वास किया की इन सब में और सब बातों में से भलाई ही को उत्पन्न करेगा। अगर हम पीछे इस घटना को देखें इब्रानी के लेखक ने कहा था कि यह कार्य उसने विश्वास के द्वारा किया था, और उसे भरोसा था कि यही वह उसके पुत्र की हत्या भी कर देगा, तो प्रभु उसे "मरे हुओं में से जिला देगा" (इब्रा. 11:19)।

आयत 3. अब्राहम ने उस रात जो मानसिक संघर्ष अनुभव किया, उसने उन्हें सुलझा भी दिया। वचन बताता है कि वह **सुबह जल्दी उठा था**। यह भाव यह दर्शाता है कि कुलपति की दिव्य निर्देश के प्रति किया तीव्र गति की थी (देखिये 19:27; 20:8; 21:14)। वह कभी भी परमेश्वर की आज्ञा को मानने में संकोच नहीं करता था। इस के विपरीत, उसने उसको दो तीन लड़के की यात्रा का प्रबंध किया (22:4), **जिसमें उसके दो जवान लड़के** (दास)**, एक गदहा, होमबलि के लिये लकड़ियाँ, और उसका पुत्र इसहाक शामिल था।**

आयत 4. बेर्शेबा से परंपरागत स्थान मोरिय्याह के पर्वत (यरूशलेम) की यात्रा पचास मील की है और इस यात्रा के दौरान अब्राहम का मन यह सोच-सोच के ज़रूर बैठा जा रहा होगा, जो परमेश्वर ने उसे कहा है करने के लिये: इसहाक को होमबलि करके चढ़ा। **वह तीसरा दिन था जब कुलपति ने दूर से वह स्थान देखा**।

आयत 5. फिर भी उसने उस यात्रा का मकसद दासों और इसहाक पर प्रकट नहीं किया। बजाय इसके, उसने **जवान पुरुषों** को **गदहे के साथ ठहरने** वहाँ का निर्देश दिया, जब कि, वह और इसहाक ने उस जगह के लिये अपनी यात्रा जारी रखी जिसके विषय में परमेश्वर ने उनसे कहा था। तब अब्राहम ने उनसे कहा, **"हम दण्डवत् करके, फिर तुम्हारे पास लौट आएँगे।"** यह कथन उसका परमेश्वर में अटूट भरोसे को दर्शाता है। कुछ हद तक - यहाँ की वह बिलकुल नहीं जानता था की कैसे - उसने यह चाहा की वह दोनों वापस आएँ।

आयत 6. यात्रा का अगला चरण, जब उन्होंने अपने **दासों** को गदहे साथ **छोड़ दिया,** बुज़ुर्ग कुलपति और उसके पुत्र के लिये शारीरिक और भावनात्मक रीति से सबसे कठिन रहा होगा। वचन कहता है **अब्राहम ने होमबलि की लकड़ियाँ ली और अपने पुत्र इसहाक के ऊपर लाद दी।** भले ही इसहाक सभंवतः उस समय किशोर था, पर इस बात में कोई शक नहीं है की उसे पहाड़ के ऊपर, होमबलि में बड़ी आग के लिए लकड़ी उठाकर ले जाने में संघर्ष करना पड़ा होगा। एक यहूदी रीति रिवाज़ की किताब बताती है कि इसहाक, पीठ पर लकड़ियों के बोझ के साथ इस प्रकार था जैसे कोई दोषी अपराधी अपना क्रूस जबरन उठाए हुए हो।[6] हम सिर्फ़ कल्पना ही कर सकते है कि अब्राहम के मन में क्या कोलाहल होगा जब वह इसहाक के साथ जा रहा था। **उसके हाथ में आग[7] और छुरी थी** जिससे वह अपने पुत्र पर इस्तेमाल करने वाला था, ताकि वह परमेश्वर के निर्देश को पूरा कर सके, यह जानते हुए की अब कुछ ही समय में, उससे इस यात्रा का असल उद्देश्य समझाना होगा।

आयत 7. जैसे ही पिता और पुत्र पहाड़ी पर एक साथ चढ़े होंगे, **इसहाक** ने ज़रूर अजीब सी खामोशी को तोड़ा होगा जब उसने अपने पिता **अब्राहम** से बात की। उसने यह जाना कि उसके पास एक जानवर को मारने और उसे वेदी पर जलाने की सारी उपयुक्त सामग्री उपलब्ध है; परन्तु उसने पूछा, **"होमबलि के लिए भेड़ कहाँ है?"** ऐसा लगता है कि लड़का अपने पिता पर पूरा भरोसा कर रहा है; परन्तु वह हैरान है क्योंकि उनके पास बलिदान के लिये कोई जानवर नहीं है। कुलपति ने उसके इस पूछने के साहस के लिये उसे नहीं डांटा परन्तु इस बात चीत से यह पता लगता है कि उनके बीच कितना गहरा प्रेम और आदर था। इसहाक ने उसे प्यार से **"हे मेरे पिता"** कहकर पुकारा; और अब्राहम ने उसे प्यार से **"हे मेरे पुत्र"** कहकर उत्तर दिया।

आयत 8. हमें इस बात का संकेत नहीं मिलता कि कुलपति इसहाक के प्रश्न से दुखी था और न ही निर्दय हुआ था उसे उत्तर देने समय अवश्य ही अपने इस प्रश्न की अपेक्षा की होगी, और उसका यह उत्तर था कि **"हे मेरे पुत्र परमेश्वर होमबलि की भेड़ का उपाय आप ही करेगा।"** दूसरे शब्दों में, आम तौर पर उपासना करने वाला ही जानवर उपलब्ध किया कि परमेश्वर ही बलिदान के लिये भेड़ उपलब्ध करवाएगा।

इसहाक का बलिदान (22:9-14)

9जब वे उस स्थान को जिसे परमेश्वर ने उसको बताया था पहुँचे; तब अब्राहम ने वहाँ वेदी बनाकर लकड़ी को चुन चुनकर रखा, और अपने पुत्र इसहाक को बाँध कर वेदी पर की लकड़ी के ऊपर रख दिया। 10फिर अब्राहम ने हाथ बढ़ाकर छुरी को लिया कि अपने पुत्र को बलि करे। 11तब यहोवा के दूत ने स्वर्ग से उसको पुकार के कहा, "हे अब्राहम, हे अब्राहम" 12उसने कहा "देख, मैं यहाँ हूँ।" उसने कहा, "उस लड़के पर हाथ मत बढ़ा और न उससे कुछ कर; क्योंकि तू ने जो मुझ से अपने पुत्र वरन् अपने एकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा; इससे मैं अब जान गया कि तू परमेश्वर का भय मानता है।" 13तब अब्राहम ने आँखें उठाईं, और क्या देखा कि उसके पीछे एक मेढ़ा अपने सींगों से एक झाड़ी में फँसा हुआ है; अतः अब्राहम ने जाके उस मेढ़े को लिया, और अपने पुत्र के स्थान पर उसे होमबलि करके चढ़ाया। 14अब्राहम ने उस स्थान का नाम यहोवा यिरे रखा। इसके अनुसार आज तक भी कहा जाता है कि यहोवा के पहाड़ पर उपाय किया जाएगा।

आयत 9. जब वह **उस स्थान** में पहुँचे जिसे **परमेश्वर** ने उन्हें बताया था, तब **अब्राहम ने वहाँ वेदी बनाकर लकड़ी चुन चुनकर रखा**। इस से पहले इसहाक लकड़ियाँ उठाकर पहाड़ के ऊपर लाया (22:6) संभवतः; उसने अपने बूढ़े पिता की जो उस समय सौ वर्षों से ज़्यादा का था, मदद भी की होगी वेदी के लिये पत्थरों को उठाने और लगाने में। निःसंदेह वचन में महत्व तो अब्राहम के आज्ञाकारी विश्वास का ही है, परन्तु इसहाक के पास वह विश्वास था जिसने सहयोग किया, क्योंकि उसने रस्सियों कि आवश्यकता पर प्रश्न नहीं विरोध भी किया जब वह उसे रस्सियों से बाँध रहा था और उसे वेदी की लकड़ियों के ऊपर लिटा रहा था। वह उतना बलवान था की लकड़ियों को उठ सके, वह इतना बड़ा था और बलवान था की अब्राहम के द्वारा उसके हाथ बांधने के समय उससे संघर्ष कर के उसे बांधने न दे सकता था, अगर वह यह चाहता तो कर सकता था। कथा का आशय यह है कि इस समय पर इसहाक ने यह महसूस किया था की वह उसके पिता का परमेश्वर के लिए नियोजित बलिदान है और तैयार शिकार था।

आयात 10. अब्राहम का मन कष्ट से भर गया होगा, जब उसने **अपने पुत्र को मारने के लिए अपना हाथ चाकू उठाने के लिए बढ़ाया होगा**। "टूटना" शब्द, טָבַח *(शचात)* का अर्थ "हत्या" करना होता है। यह बलिदान विषयक परिभाषा आमतौर पर गला काट कर वेदी पर जलाए जाने वाले जानवरों के लिए कहा जाता था (लैव्य. 1:5, 11), परन्तु यह बच्चों को अन्य जातियों के देवी देवताओं की मूर्ति पूजा के लिए बलि चढ़ाने के लिए मरने को भी कहाँ जाता था (यशा. 57:5; यहेज. 16:21; 23:39)।

आयतें 11, 12. इससे पूर्व की अब्राहम अपने पुत्र को चाकू मारे, **परमेश्वर के दूत** ने उसे, **स्वर्ग से** इन वचनों के साथ बाधित करते हुए कहा: **"अब्राहम,**

अब्राहम!" किसी व्यक्ति विशेष के नाम को दो बार उच्चारित करने का कारण, बाइबल के अनुसार, उसके ध्यान को तुरंत आकर्षित कर-कर, उसे उस काम को करने से रोकना था, जिसको वह करने जा रहा था। यह इसलिए भी था कि उसे दूसरे दिव्य निर्देशों के लिए तैयार किया जा सके।[8] फिर से, कुलपति की यही प्रतिक्रिया थी, **"देख, मैं यहाँ हूँ"** (देखें 22:1, 7)। यह इस कहानी का मोड़ है, क्योंकि दिव्य परीक्षा का उद्देश्य पूरा हो गया था। उस स्वर्गीय आवाज़ ने लड़के पर पड़ी विपत्ति को उलट दिया: **"उस लड़के पर हाथ मत बढ़ा, और न उसे कुछ कर।"**

इस निम्नलिखित वचन ने बहुत से विश्वासियों को परेशान किया है: "**क्योंकि तू ने जो मुझ से अपने पुत्र वरन् अपने एकलौते पुत्र** [याचिद[9]] **को भी नहीं रख छोड़ा; इससे मैं अब जान गया कि तू परमेश्वर का भय** [आदर] **मानता है।**" कई लोगों ने इस वचन का यह अनुवाद किया है कि परमेश्वर भविष्य नहीं देख सकते, परन्तु वही जानते है जो वह उस समय अनुभव करते है। ऐसी राय बाइबल के कई परिच्छेदों के विरूद्ध बात करती है जो यह सिखाती है कि परमेश्वर सब कुछ जानने वाला है (भजन 139:1-18; यूहन्ना 21:17; रोमियों 11:33-36)। 22:12 में कि गयी घोषणा को हमें वास्तविक रूप से ग्रहण नहीं करनी है, यहोवा का ज्ञान सिर्फ़ रूपांतरित तौर पर सीमित बताया गया है।

इस वर्णन के लिए, अब्राहम की यात्रा के पूरे प्रसंग की आलोचना करना अनिवार्य है, अब्राहम के प्रति परमेश्वर कि बुलाहट जो 12 अध्याय में दी गयी है, उससे लेकर इस मौजूदा अध्याय तक। उसके जीवन की कथा यह दर्शाता है कि कुलपति ने अक्सर अपने विश्वास और आज्ञाकारिता के साथ संघर्ष किया था। कभी-कभी अपने भरपूर विश्वास के साथ परमेश्वर की हर आज्ञाओं को पूरा किया, और कभी अन्य परिस्थितियों में विश्वास की कमी के कारण परमेश्वर की आज्ञा को नहीं माना या पूरी रीति से आज्ञा को पूरा नहीं किया। हालांकि इस अवसर पर परमेश्वर ने पूरी गहराई से उसके समर्पण की जाँच की। परमेश्वर इस बड़ी परीक्षा जो इसहाक से जुड़ी थी यह देखना चाहते थे कि कुलपति में पर्याप्त आत्मिक है कि वह अपने पूरे मन से भरोसा कर सके और आज्ञाओं का पालन कर सके। जैसे माता - पिता अपने बच्चों की बार - बार परीक्षा लेते है और बच्चे तब भी विश्वास योग्य और आज्ञाकारी रहते है, इससे माता - पिता को आनंद मिलता है - आज्ञाकारी उसी प्रकार परमेश्वर भी है, और यही जानना चाहते है; न सिर्फ़ अक्लमंदी से पर अनुभव से भी।

इसका विपरीत भी सच है। परमेश्वर जानते थे (अक्लमंदी से) की उनकी चुनी हुई जाति नष्ट हो जाएगी और बंधुवाई में पहुँचाई जाएगी क्योंकि लोग अपने पापों से और मूर्ति पूजा से मन नहीं फिराएंगे। फिर भी जब यह हुआ, परमेश्वर ने निराशा और एक टूटे हुए दिल के दर्द का अनुभव किया,[10] वैसे ही जैसे माता पिता करते है, जब उनके बच्चे अनाज्ञाकारी हो जाते हैं और विनाश से मुड़कर वापस आने को मना करते है (होशे 11:1-8)।

आयत 13. स्वर्गदूत के उससे बात करने के बाद, **अब्राहम** ने **आँखें उठाई**, और क्या देखा कि उसके पीछे **एक मेढ़ा अपने सींगों से एक झाड़ी में फँसा हुआ था**। बलिदान के लिए इस जानवर का वहाँ होना हमें कुलपति की बात, जो उसने अपने पुत्र से कही थी, याद आती है: "परमेश्वर होमबलि की भेड़ का उपाय आप ही करेगा" (22:8)।

अब्राहम ने जा के उस मेढ़े को लिया, और उसे अपने पुत्र के स्थान पर उसे होमबलि करके चढ़ाया। यह बाइबल में पहला स्पष्ट ज़िक्र है, जब एक व्यक्ति (इसहाक) को जिंदा जाने दिया हो और उसके स्थान पर एक जानवर को मार कर बलि के रूप में चढ़ाया गया हो। नियम के अनुसार यह कोई प्रायश्चित के लिए किया गया बलिदान नहीं था (लैव्य. 1:2-9; 4:27-31) क्योंकि यह लड़के के पाप के कारण नहीं था कि उसे अपने पिता के हाथों से मरना पड़े। बल्कि यह कुलपति के विश्वास की एक सफ़ल परीक्षा थी। इस समय तक अब्राहम यह विश्वास करने लगा था कि परमेश्वर "मुर्दों में से लोगों को जिला सकता है, उसी प्रकार वह [इसहाक] को भी वापस प्राप्त कर सका" (इब्रा. 11:19), जिसको "लाक्षणिक रूप" से बोला गया है (NIV)।[11] हालांकि, अब्राहम ने इसहाक की त्वचा को चाकू से बेधा भी नहीं था किन्तु उसने अपने मन के दृढ़ संकल्प से उसके मांस में चाकू को पहले से ही बेध दिया था। इसके फलस्वरूप, उसकी खुशी उतनी ही थी, जैसे उसने अपने किसी प्रिय को मुर्दों में से वापिस पाया हो।

आयत 14. अब्राहम ने **उस स्थान** का नाम יְהוָה יִרְאֶה *(यहवह यिरे)*, जिस का अनुवाद है, **परमेश्वर प्रदान करेगा**। इस वाक्य का अर्थ यह भी हो सकता है, "परमेश्वर देखेंगे" (देखे. KJV); परन्तु यहाँ आयत 8 के कारण, "प्रदान करेगा" बेहतर समझ में आता है। कुलपति ने इस जगह का नाम "अब्राहम ने आज्ञा मानी" अपनी वफ़ादार आज्ञाकरिता की महिमा करने के लिए नहीं रखा; बजाय इसके, अपने पुत्र के स्थान पर, बलिदान के लिए परमेश्वर द्वारा भेड़ के प्रावधान को आदर किया। अपने लेख में एक और जानकारी जोड़कर मूसा ने लेख के पढ़ने वालों को बताया है कि, **आज तक भी कहा जाता है, "यहोवा के पहाड़ पर उपाय किया जाएगा।"**

परमेश्वर के वायदे का नवीकरण (22:15-19)

15फिर यहोवा के दूत ने दूसरी बार स्वर्ग से अब्राहम को पुकार के कहा, 16"यहोवा की यह वाणी है, कि मैं अपनी ही यह शपथ खाता हूँ कि तू ने जो यह काम किया है कि अपने पुत्र वरन् अपने एकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा; 17इस कारण मैं निश्चय तुझे आशीष दूँगा; और निश्चय तेरे वंश को आकाश के तारागण, और समुद्र के तीर की बालू के किनकों के समान अनगिनित करूँगा, और तेरा वंश अपने शत्रुओं के नगरों का अधिकारी होगा; 18और पृथ्वी की सारी जातियाँ अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी: क्योंकि तू ने मेरी बात मानी है।" 19तब अब्राहम अपने सेवकों के पास लौट आया, और वे स बेर्शेबा को संग -

संग गए; और अब्राहम बेर्शेबा में रहता रहा।

आयतें 15, 16. एक अन्य संदेश **स्वर्ग से** आया। **यहोवा के दूत** ने स्वर्ग से कहा, **"कि मैं अपनी ही शपथ खाता हूँ,"** जिसका यह अर्थ था कि **अब्राहम को** दी हुई शपथ का विशेष महत्व और प्रतिष्ठा थी, जो यहोवा के विश्वसनीय चरित्र पर आधारित था (देखें यिर्म. 22:5; 49:13; आमोस 4:2; 6:8; इब्रा. 6:13-18)। तब **परमेश्वर ने** महान् प्रतिज्ञा का कारण कुलपति को बताया: यह **इसलिये** हुआ क्योंकि उसने **यह कार्य किया** था - की उसने आज्ञाकारी विश्वास के साथ, अपने **पुत्र** को भी **नहीं** रख छोड़ा, अपने **एकमात्र** [अद्वितीय] **पुत्र** को, उससे जो उसके अपने हाथों से इसहाक की मृत्यु का कारण हो सकती थी।

आयत 17. जब अब्राहम ने अपने सर्वश्रेष्ठ विश्वास को अपने कार्यों से प्रदर्शित किया, तब परमेश्वर ने उन सभी वायदों को जो उसने उसे दिए थे दोहराया। इस बार, सभी वायदे परमेश्वर के कभी न बदलने वाले चरित्र के द्वारा सुनिश्चित किये गए। यह वायदा इस प्रकार था: **"मैं निश्चय तुझे आशीष दूँगा; और निश्चय तेरे वंश को आकाश के तारागण, और समुद्र के तीर की बालू के किनकों के समान अनगिनित करूँगा।"** इब्रानी भाषा में "बीज" זֶרַע *(ज़ीरा)* शब्द एकवचन है; परन्तु कभी-कभी इसका सामूहिक मतलब भी है जैसे "वंशज" (NIV) या "संतान" (NRSV), जैसे इस मामले में है। "आकाश के तारे" और "समुद्र तट पर ... बालू" एक अनगिनत समूहों को दर्शाता है (13:16; 15:5; 26:4; 32:12)।

कुलपति के वंशज **अपने दुश्मनों के फाटकों के अधिकारी होंगे**, वायदे में जिस अलंकार का प्रयोग किया गया है उसे "उपलक्षण" कहते है, जिसमें एक हिस्सा (एक द्वार) पूरे (एक नगर) का प्रतीक होता है।[12] एक नगर को जीतने की कुंजी, उसके द्वार को आग या मोटे शहतीर से नष्ट करने में थी। वायदे के इस भाग ने इस्राएलियों को कनान देश पर जय पाने की उम्मीद दिलायी गयी, जिसकी शुरूआत यहोशू से हुई और राजा दाऊद के राज्यकाल तक भी पूरी नहीं हुई थी।

आयत 18. यहोवा के वायदे के बाद का हिस्सा - की अब्राहम के **बीज में सारी पृथ्वी की जातियाँ आशीष** [पाएँगी] - तब तक फलदायी नहीं हो सका जब तक यीशु मसीह, दाऊद की महान संतान बनकर, इस दुनिया में न आए (मत्ती 1:1-17)। यह यीशु की मृत्यु और पुनरुथान के बाद ही हुआ, जिसने उसके मसीह होने की बात को साबित किया (प्रेरितो 2:29-36; रोमियों 1:1-4), की वायदे के "बीज" की धारणा और चौड़ी हो गई, और उन्हें भी शामिल किया जो भी मसीह में विश्वास और बपतिस्मा के द्वारा एक हुए हों। जिन सब का भी मन परिवर्तन हुआ, जिन भी देशों से, सब अब्राहम के "बीज" (वंशज) और "वारिस" परमेश्वर के वायदे के अनुसार, माने गए हैं (गला. 3:8, 9, 26-29)। इन सब का अर्थ यह है कि कुलपति स्वयं इन सब वायदों को पूरा होते हुए देखने के लिए जीवित न रह सकेगा; उसे विश्वास के साथ चलते रहना होगा की यहोवा, जिसने "स्वयं अपनी शपथ खाई है," एक दिन उन्हें पूरा भी करेगा (इब्रा. 6:13, 14)।

परमेश्वर ने कहा की वह अब्राहम के बीज (वंशज) के द्वारा पृथ्वी की सारी जातियों को आशीष देगा **क्योंकि** उसने यहोवा की **आवाज़** का **पालन** किया था। इससे पहले यह वायदे पूरी तरह परमेश्वर की इच्छा और उसके उद्देश्यों पर आधारित थे। इस घटना के बाद, वह दोनों बातों यानी यहोवा की इच्छा और कुलपति की आज्ञाकारिता पर आधारित हो गए। आज्ञाकारिता, अब्राहम और उत्पत्ति के लेख के अलावा, कुलपति के वंशजों के लिए भी आवश्यक होगी, जब वह कनान देश में खुदा को स्थापित करने के लिए प्रयास कर रहे होंगे और वहां बने रहने के लिए भी (व्यव. 6:4-15; 11:13-17; 30:15-20)। अब्राहम का आज्ञाकारी विश्वास इस बड़ी परीक्षा के दौरान - इसहाक का बलिदान - हर विश्वासी के लिए कष्ट के समय में सीख लेने के लिए एक उदाहरण के तौर पर है।

आयत 19. भेड़ को चढ़ाने के पश्चात् **अब्राहम अपने सेवकों के पास लौट आया, और वे सब उठे और बेर्शेबा में अपने** [घर] **की ओर संग गए**। इस अनुच्छेद में केवल "अब्राहम" का "अपने सेवकों के पास" लौटने का उल्लेख, कई सदियों से टिप्पणीकारों को उलझन में डालते आया हैं। यहूदी विद्वानों ने इस वचन से इसहाक के अभाव को समझाने के लिये कई काल्पनिक व्याख्याओं की पेशकश की। कुछ ने दावा किया कि कुलपति ने वास्तव में अपने पुत्र का, पाप बलि की नाई बलिदान चढ़ाया। कुछ यह सीखते है कि अब्राहम ने उसे मार डाला, और फिर परमेश्वर ने उसे मुर्दों में से जिलाया, और स्वर्गदूत उसे स्वर्ग में ले गए। इसके अलावा भी बहुत सी अटकलें लगाई गई है इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए, "इसहाक कहाँ गया?"

क्यों इसहाक का इस भाग के अंत में ज़िक्र नहीं होता इस बात को समझाने के सारे प्रयास इन दो कारणों के कारण अनुचित हैं। पहला, वचनों में इसहाक की गैर मौजूदगी कहानी की शुरूआत में सारा की गैर मौजूदगी के समानांतर है। जाहिर सी बात है, सारा कि भावनाओं, विचारों या बातों को अब्राहम और इसहाक के मोरिय्याह पर्वत पर कूच करने से पहले प्रकट करने की लेखक की कोई मंशा नहीं थी। इसी तरह उसके पुत्र की, कठिन परीक्षा से लौटने के पश्चात, उसकी भावनाओं का लेखन भी लेखक ने ज़रूरी नहीं समझा।

दूसरा, इस कहानी के अंत में इसहाक के अनुभाव पर अटक कर, पाठकों का ध्यान केंद्र से हट जाता है। इस कहानी का उद्देश्य यह नहीं था कि इन बातों के बारे में बताया जाए कि इसहाक के मन की अवस्था क्या थी या वह क्या कहता जब वह और उसका पिता बेर्शेबा वापिस पहुँचे। बल्कि, इस कहानी का कारण उस विश्वास को उजागर करना था जिसने अब्राहम की, कभी चित में न आने वाली परीक्षा में सफ़ल होने में उसकी मदद की जिसे यहोवा ने दिया था की अपने वायदे के पुत्र को बलिदान करे। वचन हमें उसके परमेश्वर के प्रति सम्पूर्ण भरोसे और निर्विवाद आज्ञाकारिता के बारे में सिखाता है, जिसने उसे भविष्य के विश्वासियों के लिए विश्वासियों का पिता बनाया। जिन्होंने ने उसके समान विश्वास किया वह उसके आत्मिक वंशज बन गये।

अब्राहम के परिवार के बारे में एक समाचार सूचना (22:20-24)

[20]इन बातों के पश्चात् ऐसा हुआ कि अब्राहम को यह सन्देश मिला, "मिल्का के तेरे भाई नाहोर से सन्तान उत्पन्न हुई हैं।" [21]मिल्का के पुत्र तो ये हुए, अर्थात् उसका जेठा ऊस और ऊस का भाई बूज और कमूएल जो अराम का पिता हुआ, [22]फिर केसेद, हज़ो, पिल्दाश, यिद्लाप, और बतूएल। [23]इन आठों को मिल्का ने अब्राहम के भाई नाहोर के द्वारा जन्म दिया। और बतूएल से रिबका उत्पन्न हुई। [24]फिर, नाहोर के रूमा नामक एक रखैल भी थी; जिस से तेबह, गहम, तहश, और माका उत्पन्न हुए।

अब्राहम के पिता तेरह के, दो अन्य पुत्र भी थे: नाहोर और हारान। हारान कि मृत्यु ऊर नामक नगर में परिवार के कनान को जाने से पहले ही हो गई थी (11:27, 28)। उत्पत्ति के लेखक ने हारान के पुत्र लूत की कुछ कहानियाँ अध्याय 12 से 19 में शामिल की है। किन्तु वह, कुछ क्षण के लिए श्रृंखला को बदल उलटता है और फिर नाहोर पर लौटता है ताकि उसकी पोती रिबका का परिचय दे सके, जो बाद में इसहाक से मिलेगी और उस से विवाह करेगी (अध्याय 24)।

आयत 20. अब्राहम के **भाई नाहोर** की खबर, इसहाक के बलिदान के कई सप्ताह बाद नहीं बल्कि कई सालों बाद मिली होगी। **इन बातों के पश्चात का** जो वाक्यांश है यह हमें अनिश्चित अवधी का संकेत देता है कि इससे पूर्व की कुलपति के भाई के परिवार के बारे में, किसी यात्री के द्वारा, कुलपति को सूचना मिली जो हराना में थे, अस्पष्ट अवधि समय था। ऐसा प्रतीत होता है कि, **मिल्का**, जो हारान की पुत्री थी (11:29), के बारे में यह जाना कि उसने उसके भाई नाहोर के लिए **पुत्र जाना** है, अब्राहम आश्चर्यचकित था। निःसंदेह, दोनों भाइयों की कोई संतान नहीं थी जब वह हारान में जुदा हुए थे; परन्तु कुछ सालों के पश्चात, वह दोनों ही, पिता बने। यह ज़ाहिर है कि मिल्का सारा से बहुत छोटी थी। उसके आठ पुत्र थे जबकि सारा का सिर्फ़ एक पुत्र था।

आयतें 21, 22. मिल्का का **पहिलौठा** पुत्र **उज़** था। उसे जातियों की सूची में से "उज़" नाम के व्यक्ति के नाम से भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए, जो आराम के वंश से था। उज़ नाम पुराने नियम में एक स्थान के नाम के रूप में भी प्रयोग किया गया है (10:23 पर टिप्पणियाँ देखें)।

बूज़ जिसके वर्णन यहाँ पाया जाता है, वह याकूब के पुत्र गाद के वंश से नहीं है (1 इतिहास 5:11, 14)। यह नाम भी एक स्थान के लिए प्रयोग किया गया है। एलीहू, जिसने अय्यूब को सलाह दी थी, वह बूज़ से आया था (अय्यूब 32:2), जिसे यिर्मयाह ने ददान और तेमा जो अरब में हैं, से संबंधित किया (यिर्म. 25:23)।

गिनती 34:24 और 1 इतिहास 27:17 के वाक्यों में **कमूएल** नाम कई व्यक्तियों को दिए गए जो संबंधित भी नहीं हैं। इसके अलावा हमें उसके बारे में कोई और जानकारी नहीं है इसके अलावा की वह **अराम का पिता** था, जो एक

अलग व्यक्ति है शेम के वंश में से, जिसका वर्णन 10:22 में किया गया है। हालांकि, अराम नाम अरामी से संबंधित लगता है जो हारान में नाहोर के गोत्रों में से एक है।

कैसेद एक ऐसा नाम है जो पुराने नियम में और कहीं नहीं पाया जाता। यह कसदियों से जुड़ा हुआ है, जिन्होंने शुरुआती सातवीं शताब्दी ईसा.पूर्व नबूकदनेस्सर राजा के अधीन बेबीलोन साम्राज्य की स्थापना की। हज़ो, पिलदाश और यिद्लाप का उल्लेख पूरे साहित्य में यहीं किया गया है।

मिल्का के नाहोर से उत्पन्न आठ संतानों की सूची में आखिरी नाम **बतूएल** का है। उसके नाम का अर्थ "परमेश्वर में रहने वाला" हो सकता है या फिर "परमेश्वर का व्यक्ति" भी हो सकता है।[13] 25:20 में, बतूएल एक "अरामी" जो पद्दन अराम में बसता है पहचाना गया है (उत्तर पश्चिमी मेसोपोटामिया)।

आयत 23. बतूएल रिबका और लाबान का **पिता** था (24:15, 47; 28:5)। इस पाठ में नाहोर के वंशजों में से रिबका ही एकमात्र चर्चित महिला वंशज है। अध्याय 24 में रिबका का परिचय पाठकों को उसके और इसहाक के विवाह के लिए तैयार करता है।

आयत 24. अब्राहम के समान उसके भाई नाहोर की भी **रखैल** थी जिसका नाम रूमा था। रखैल दासियां होती थी, जो दूसरे दर्जे की पत्नियाँ बनती थी और जिन्हें सामान्य पत्नियों से कम अधिकार प्राप्त होते थे (16:3 पर की टिप्पणी देखें)। हालाँकि, पति के परिवार का हिस्सा होने के नाते, उसके पुत्रों को भी पिता की विरासत में से हिस्सा प्राप्त होता था।[14] रूमा ने चार पुत्रों को जन्म दिया थाः **तेबह और गाहम और तहाश और माकह**। हमें इनके बारे में कम जानकारी है, किन्तु इनके नाम आधुनिक लेबनान और सीरिया में विभिन्न प्रान्तों से जुड़े है।[15] कुल मिलाकर नाहोर के बारह पुत्र हुए - आठ उसकी पत्नी मिल्का से और चार उसकी रखैल रूमा से उत्पन्न हुए।

अनुप्रयोग

अब्राहम का विश्वास (अध्याय 12-22)

अपनी बुलाहट के अनुसार, जिस समय से अब्राहम कसदियों के ऊर नगर से अपने सम्बन्धियों को छोड़ कर निकला, उस समय से उसका विश्वास परमेश्वर के आज्ञा मानने के कारण और भी बढ़ गया था।

वायदे के देश में पहुँचते ही, अकाल के कारण उसको अपने साथ आये हुए लोगे के साथ मिश्र देश को जाना पड़ा। वहाँ उसने फिरौन को अपनी पत्नी के प्रति झूठ बोला और कहा कि वह उसकी बहन है (12:10-20)। कई वर्ष पश्चात उस ने गरार के राजा के सामने भी ऐसे ही किया (20:1-18)। एक समय के बाद, उसने अपने स्वयं के पुत्र होने की मंशा को त्याग दिया और अपने सेवक एलीएजेर को ही अपना वारिस होने के लिए चुन लिया (15:1-4)। और फिर अपनी पत्नी सारा की बात सुन कर पुत्र पाने की इच्छा से, सारा की दासी हाजिरा को अपनी

सेवक-पत्नी के रूप में लिया, और उसके द्वारा पुत्र पैदा किया (16:1-4)। इश्माएल के जन्म के पश्चात, अब्राहम ने परमेश्वर से इश्माएल को वायदे के पुत्र के रूप में ग्रहण करने की विनती की। उसकी वृद्धावस्था में, जब परमेश्वर ने उसके और सारा के द्वारा पुत्र होने की बात कही, तब वह अविश्वास के साथ हँसा (17:1, 15-19)।

कुलपति का विश्वास कई बार अस्थिर और उसकी आज्ञाकारिता सिद्ध होने से मीलों दूर दिखाई दी। हालांकि, उसके सम्पूर्ण जीवनकाल में परमेश्वर विश्वासयोग्य थे और उसे सोने, चांदी और झुंड के साथ सकारात्मक तरीके से आशीष देता रहे। जब कुलपति की आस्था कमज़ोर होती, तब परमेश्वर अपने वायदे को अब्राहम को याद दिलाते, जो उसने अब्राहम से ऊर और हारान में किए थे।

यहोवा परमेश्वर को अब्राहम पर उस समय भी विश्वास था, जब कुलपति भी स्वयं पर विश्वास नहीं कर पा रहा था। जब अब्राहम के लोगों ने पूर्व के चार राजाओं को हरा दिया (14:8-16), तब परमेश्वर ने अपने भयभीत सेवक को यह कहा, "तेरी ढाल और तेरा अत्यंत बड़ा प्रतिफल मैं हूँ" (15:1)। जब अब्राहम निन्यानवे और सारा नवासी वर्ष की थी, तब परमेश्वर ने अपने वाचा वादे को दोहराया और उन पर पुत्र प्राप्ति की बात को प्रकट किया। परमेश्वर ने स्वयं का परिचय *'एल शिद्दै*, या "सर्वशक्तिमान परमेश्वर" के रूप में किया (17:1-8, 15-19)। बाद में, यहोवा ने यह बात की, अब्राहम और सारा का एक पुत्र होगा दोहराया (18:10)। वह, भी, अविश्वास में हँसी। परमेश्वर ने अपने वायदे को दोहराया यह दर्शाते हुए की पुत्र अगले वर्ष उत्पन्न होगा। उन्होंने यह कह कर समाप्त किया की उनके लिए कुछ "भी बहुत कठिन" नहीं है (18:9-15)।

यहोवा के विश्वासयोग्यता और वायदों के कारण अब्राहम का विश्वास धीरे-धीरे मज़बूत होता चला गया। जब उसका और सारा का शरीर, मृत का सा था, जहाँ तक पुत्र उत्पन्न होने की बात थी, उसने यह भरोसा रखना सीखा कि, "परमेश्वर ... जो मरे हुओं को जिलाता है, और जो बातें हैं ही नहीं उनका नाम ऐसा लेता है कि मानो वे हैं" (रोमियों 4:17)। उसने अपनी आशा, परमेश्वर की शक्ति और विश्वासयोग्यता पर आधारित की।

> हम पढ़ते हैं, उस ने निराशा में भी आशा रखकर विश्वास किया, इसलिये कि उस वचन के अनुसार कि तेरा वंश ऐसा होगा वह बहुत सी जातियों का पिता हो। और वह जो एक सौ वर्ष का था, अपने मरे हुए से शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई की सी दशा जानकर भी विश्वास में निर्बल न हुआ। और न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह किया, पर विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की। और निश्चय जाना, कि जिस बात की उस ने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरी करने को भी सामर्थी है(रोमियों 4:18-21)।

उत्पत्ति का पद यों कहता है, "यहोवा ने ... सारा की सुधि ले के उसके साथ अपने वचन के अनुसार किया। सारा अब्राहम से गर्भवती हुई; और उसके बुढ़ापे

में, एक पुत्र उत्पन्न हुआ" (21:1, 2)। एक बाँझ की तरह इतने साल दुःख भोगने के पश्चात् उसके विश्वास की भी पुष्टि हुई। इस बार वह हँसी, अविश्वास के कारण नहीं, बल्कि आनंद के कारण। उसने उन सबको बुलाया जो इस अनोखी घटना के बारे में सुन सकते थे, ताकि वह सब उसके साथ आनंदित हो (21:6)।

इब्रानियों के लेखक ने अब्राहम और सारा के विश्वास की प्रतिक्रियाओं को परमेश्वर के लोगों के लिए एक उदाहरण के रूप में प्रदर्शित किया है, ताकि हम हर समय उसका अनुकरण कर सके (इब्रा. 11:8-12)। परमेश्वर के वायदे के पूर्ण होने के अनुभव के साथ ही, दो वृद्ध शरीरों में शक्ति आ गई और फिर इसहाक का जन्म हुआ, और फिर इसमें कोई दो राय नहीं थी, कि वह सचमुच सर्वशक्तिमान परमेश्वर है।

अब्राहम के विश्वास की परम परीक्षा तब हुई जब परमेश्वर ने उससे अपने वायदे के पुत्र को, जिसका इंतज़ार उसने इतने वर्षों से किया, बलिदान करने की आज्ञा दी (22:1-14)। बिना कोई सवाल किए, अब्राहम अपने पुत्र को मोरिय्याह पर ले गया और उसे वेदी पर लेटा दिया। उसके चाकू का निशाना अपने पुत्र पर था, जब दूत ने उसे रोका। अब कुलपति परमेश्वर पर पूर्ण रीति से विश्वास करता था और जानता था की उसके पास समर्थ है की वह मुर्दों को भी जिला सकता हैं। उसके विश्वास और आज्ञाकारिता है परिणाम यह था कि, उसे बहुतायत से आशीष मिली और वह विश्वासियों का पिता भी ठहराया गया (रोमियों 4:16)।

हमारे विश्वास की परीक्षा (22:1-14)

अपने जीवन के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में परीक्षा और परीक्षणों को सहना कोई सुखद अनुभव नहीं है, किन्तु यह अनिवार्य हैं। इन सब बातों के लिए जैसे कि किसी मुश्किल विषय पर विजय पाना, नए काम के लिए प्रशिक्षण लेना या फिर एक विश्वासयोग्य कर्मचारी बनने का प्रयास, यह कथन सत्य है। इसी प्रकार, विश्वास के चाल चलन में, परीक्षा और परीक्षण भी अनिवार्य है आत्मिक उन्नति और परमेश्वर के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को सिद्ध करने के लिए। सबल मांसपेशियों को प्राप्त करने के लिए, एक भारोत्तोलक को ऐसी वस्तु पर काम करना चाहिए जो उसे बाधित करे। इसी रीति से, परमेश्वर हमारी परीक्षा लेते हैं या शैतान को अनुमति देते हैं कि वह हमें बहका सके, ताकि हमारी आत्मिक मांसपेशियाँ विकसित हो, जो अधर्म के सागर को पार करने में हमारी सहायता करें, जिसके न होने से हम विनाश के सागर में डूब जाएंगे।

इब्री और यूनानी, दोनों भाषाओं में, "प्रलोभन" (भूरे संदर्भ में) शब्द का प्रयोग "परीक्षा" (अच्छे संदर्भ में) किया गया हैं, और इसका सही अर्थ प्रसंग से ही पता चल सकता है।[16] वचन यह सीखता है कि शैतान विश्वासियों को पाप करने और आत्मिक रीति से नष्ट होने के लिए "प्रलोभित" करता है (मत्ती 4:1-11; मरकुस 1:13; 1 कुरि. 7:5; 1 थिस्स. 3:5; याकूब 1:13-15)। तथापि, परमेश्वर अपने लोगों को बलवान और अपने प्रति उनकी विश्वासयोग्यता को प्रमाणित

करने के लिए उनकी परीक्षा लेते है (22:1; निर्गमन 20:20; व्यव. 8:2; यूहन्ना 6:6; 1 कुरि. 10:13; इब्रा. 11:17; याकूब 1:2-4, 12)।

परमेश्वर लोगों को कठिन आज्ञाओं का पालन करने का कार्य दे कर, जो कभी अकारण भी प्रतीत होती है, परीक्षा लेते है (22:1, 2)। परमेश्वर का इसहाक को, जो वायदे का पुत्र था, मोरिय्याह पर्वत पर "होमबलि" के रूप में बलिदान करने की आज्ञा, अब्राहम के लिए सबसे ज़्यादा कठिन या अकारण बात रही होगी। किन्तु यह वह सबसे मुश्किल आज्ञा नहीं थी जो परमेश्वर ने कुलपति को दी। यद्यपि "परीक्षा" शब्द का प्रयोग इन वाक्यों में ज़्यादा नहीं किया गया, वास्तव में परमेश्वर ने अब्राहम की परीक्षा तब से शुरू कर दी थी, जब उसने उससे कसदियों के ऊर में से बुलाया और फिर हारान में भी। दोनों ही स्थितियों में, परमेश्वर ने उसे अपने परिवार को पीछे छोड़ने और कनान देश की ओर जाने को कहा (11:31; 12:1-4; प्रेरितों 7:2-4)। क्योंकि उसने दोनों ही अवसरों में आधी ही बात मानी और अपने साथ अपने कुछ परिवारजनों को ले गया और कई वर्ष हरान में भी रुका, हम कह सकते हैं कि उसने इन दोनों ही परीक्षाओं में उत्तम अंक प्राप्त नहीं किए।

जब कुलपति आखिरकार वायदे के देश में पहुंचे, अकाल के कारण वहां रुक नहीं सके। वह मिस्र को चले गए, जहाँ पर उसने फिरौन से झूठ बोला कि सारा उसकी पत्नी नहीं बल्कि उसकी बहन थी (12:10-20)। बहुत सालों के पश्चात् उसने फिर से यही झूठ दोहराया एक पलिश्ती राजा, गरार के अबीमेलेक के साथ (20:1-18)। वह यह दोनों परीक्षाओं में भी असफ़ल रहा।

इसके अतिरिक्त, उसने हाजिरा के साथ, जो उसकी दासी थी, पुत्र उत्पन्न करने की सारा की योजना को माना (16:1-4)। जब वह निन्यानवे और सारा नवासी वर्ष के हुए, परमेश्वर ने कहा की पुत्र अगले वर्ष होगा। उसकी प्रतिक्रिया यह थी की वह मुंह के बल गिरा और अविश्वास के कारण हँसा। उसने परमेश्वर से विनती की, कि वह इश्माएल को वायदे के पुत्र के रूप में स्वीकार करे (17:15-19)।

इन सभी उदाहरणों में, अब्राहम दिव्य परीक्षाओं में असफ़ल रहा। वह इसलिए असफ़ल नहीं हुआ क्योंकि उसने अपने हृदया को अविश्वास के कारण, परमेश्वर के प्रति कठोर कर लिया था; इसके प्रतिकूल, वह फिर भी परमेश्वर पर विश्वास रखे हुए था, और परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कार्य करना चाहता था। परन्तु, मुश्किल और भयंकर परिस्थितियों में, ऐसा जान पड़ता है की कुलपति अपने तरीकों को परमेश्वर के तरीकों से ज़्यादा उचित, तार्किक और फायदेमंद समझता है। उसे "रूप को देखकर नहीं" किन्तु "विश्वास से चलना" सीखना था (2 कुरि. 5:7)।

यह सदियों पुरानी समस्या आज भी हमारे साथ है। हम कई बार ठोकर खाकर गिर जाते हैं क्योंकि आगे आने वाले खतरों को हम देख नहीं सकते, या फिर परमेश्वर के बताये रास्तों को छोड़, अपने बनायीं योजना और रास्तों पर

ज़्यादा आश्वस्त हो जाते हैं। ज्ञानी ने यह निरीक्षण किया, "ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक जान पड़ता है, परन्तु उसके अंत में मृत्यु ही मिलती है" (नीति. 14:12)।

जो उनके पीछे चलते थे, यीशु उनसे कठिन मांग करते, जो मनुष्य की दृष्टि से, बहुत गंभीर, अविवेकी या असंभव भी प्रतीत हो सकते थे।

1. एक अवसर पर, उसने उस मनुष्य की परीक्षा ली जो उनका चेला बनने की इच्छा रखे हुए था, यह कहकर ली, "मेरे पीछे हो ले।" इस पर उस मनुष्य की प्रतिक्रिया यह थी, "हे प्रभु, मुझे पहले जाने दे कि अपने पिता को गाड़ दूँ।" यीशु ने यह कहकर उसे रोका, "मरे हुओं को अपने मुर्दे गाड़ने दे; पर तू जाकर परमेश्वर के राज्य की कथा सुना" (लूका 9:59, 60)। प्राचीन पूर्व ईस्ट में, अपने माता पिता के प्रति आदर, उन्हें एक उचित कब्रगाह देकर दिखाई जाती थी, जो उनके लिए एक पवित्र दायित्व था। बेशक, हम नहीं जानते कि उस मनुष्य के पिता सच में मर गए थे या मरने वाले थे या फिर पूर्ण रीति से अच्छी सेहत में थे। हो सकता है कि मनुष्य ने अपने पिता को एक बहाने के तौर पर, चेला बनने की बुलाहट से बचने के लिए इस्तेमाल किया हो; परन्तु चाहे जो भी बात रही हो, यीशु यह एलान करते है कि, परमेश्वर के राज्य को प्रधानता मिलनी चाहिए, यहाँ तक कि पारिवारिक ज़िम्मेदारियों पर भी।

2. यीशु द्वारा एक और चौंका देने वाला एलान आने वाले अनुयायियों की परीक्षा का था: "यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और बच्चों और भाइयों और बहनों वरन अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता" (लूका 14:26)। तथापि मत्ती ने यीशु का समानांतर उदाहरण दिया है, जो सुनने वालों को कम चौंकाएगा, किन्तु चाह को कुछ कम नहीं दर्शाता। इसलिए, "अप्रिय" शब्द का प्रयोग ना करते हुए, जैसा कि लुका ने किया, उसके लेख में यही बात इस रीति से दी गयी है, "जो माता या पिता को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं" (मत्ती 10:37)। ऐसा करते हुए, मत्ती इब्री शब्द שָׂנֵא *(सेन)* के प्रयोग की व्याख्या करते हैं, जो निस्संदेह नए नियम के शब्द "अप्रिय" के पीछे खड़ा होता है। कुछ परिस्थितियों में *सेन* का अर्थ "कम प्रिय" मानना है, बजाए उस मनुष्य के प्रति वास्तविक बैर, दुर्भावना या घृणा के। इसलिए KJV के अनुवादकों ने दो बार यह कहकर, अपने पाठकों का अपकार किया है, कि याकूब लिआ को "अप्रिय" *(सेन)* मानता था, उत्पत्ति 29:31, 33. यथार्थ में, 29:30 स्पष्ट रीति से संकेत देता है कि याकूब लिआ से प्रेम करता था, किंतु राहेल जितना नहीं। इसी प्रकार, यीशु के ऊपर दिए गए कथन का अर्थ भी यही था कि कोई भी नहीं - माता - पिता, भाई - बहन - या जीवन ही, परमेश्वर के साथ हमारी प्रतिबद्धता के ऊपर प्राथमिकता नहीं ले सकता।

3. एक अन्य परीक्षा जिसने यीशु के चेलों को चुनौती दी, वह थी उसकी चकित करनेवाली मांग, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का

इनकार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिए अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा" (मत्ती 16:24, 25)। रोम में क्रूस यातना और मृत्यु का एक साधन था, जो गैर नागरिकों, जैसे की, गुलामों, विद्रोही विदेशियों और घिनौने अपराधियों के लिए आरक्षित था। यह वाक्य प्रेरितों की आशा और जो भी उन्होंने परमेश्वर के राज्य के विषय में सोचा था, उसके विपरीत चला गया। वह तो दिव्य आशीषों, धन और यीशु, जो मसीहा है, के दाहिने और बाए हाथों पर सिंहासनों की प्रतीक्षा कर रहे थे। क्रूस पर कष्ट उठाना उनके विचारों से काफी दूर था।

यीशु के चेलों को इस सत्य को समझने में कठिनाई हुई। कई अवसरों पर, उनके थोड़े विश्वास और कम समझ के कारण, प्रभु को उन्हें सही करना पड़ा। इसलिए हमें इस बात पर चकित नहीं होना चाहिए कि, अब्राहम को इतने वर्ष लगे अपनी बुलाहट के पूर्ण महत्त्व को समझने में, कि उसके द्वारा पूरी मनुष्य जाति आशीषित हो और वह विश्वासियों का पिता ठहरे (रोमियों 4:16)। उत्पत्ति के पद से ऐसा लगता है कि कई वर्षों के लिए उसने परमेश्वर की आवाज़ को उसे चलाने, डाँटने या वायदा देने के लिए, नहीं सुना; इस कारण उसे विश्वास द्वारा चलना, अनियत दिव्य अनुदेश के साथ, सीखना था।

उसके आत्मिक ज्ञान के स्वभाव से हम समझ सकते हैं कि क्यों परमेश्वर कुलपति के प्रति इतने धीरजमय और सहनशील है। उसके पास सीमित दिव्य सत्य था, क्योंकि वह मनुष्य जाति के "स्टारलाइट"[17] समय में था। कैसे यह व्यक्ति जिसके अपने विश्वास में खामियां थी और आज्ञा मानने में कई बार असफ़ल रहा, "विश्वासियों का पिता" ठहरा? अब्राहम ने कभी भी परमेश्वर पर विश्वास करना बंद नहीं किया, जबकि उसका विश्वास कई बार कमज़ोर था। उसने कभी भी परमेश्वर के हाथों को जाने नहीं दिया, और न ही परमेश्वर ने। यह सत्य है कि उसे परमेश्वर की योजना पर अधिक भरोसा करने की ज़रूरत थी, बजाए अपनी योजना के - किन्तु फिर विश्व के विश्वासी किस बात पर दावा करते? अंतिम विश्लेषण में, उसने कभी परमेश्वर को छोड़ा नहीं, और न यहोवा ने उसे कभी छोड़ा।

इसे कोई फ़र्क नहीं पड़ता की एक व्यक्ति कितनी बार ठोकर खाकर गिरता है; फर्क इस बात से पड़ता है कि वह उठ कर अपनी असफलताओं से सीखता है, और धीरे-धीरे परमेश्वर के साथ अपने चाल चलन में अधिक बलवान और विश्वासयोग्य हो जाता है। जबकि कुछ लोग अपनी असफलताओं को नज़रंदाज करते हुए कोई सीख नहीं लेते, अब्राहम ने सीख ली। जब परमेश्वर ने परम परीक्षा की आज्ञा दी - इसहाक को बलिदान करने की - कुलपति का विश्वास यहोवा पर इतना बढ़ चुका था कि उसने उसके निर्देश का पालन करने में कोई हिचकिचाहट न दिखाई। उसने और सारा ने परमेश्वर की ओर से एक चमत्कार का अनुभव पा लिया था, जिसने उनके वृद्ध शरीर में फुर्ती पैदा की थी ताकि वह

प्रसव के लिए तैयार हो सके, जिसका परिणाम इसहाक का जन्म था। अब्राहम का यह विश्वास था कि अगर उसे अपने पुत्र को मारना भी पड़े, जो कि उसके सभी दिव्य आशीषों का वारिस था, परमेश्वर निःसंदेह ही उसे मुर्दों में से जिलाएगा (इब्रा. 11:17-19)। ऐसे विश्वास की प्राप्ति अब्राहम को रात भर में नहीं हुई थी, और ना ही आज के मसीह जनों के लिए हो सकती है। कोई अपने कार्यप्रणाली को किस तरह समाप्त करता है वह महत्वपूर्ण है, ना कि किस प्रकार उसने शुरुआत की या कितनी बार गलत कदम उठाये (2 तीमु. 4:5-8)।

जब परमेश्वर विश्वासियों की परीक्षा और परीक्षणों के लिए अनुमति देते है, यह आवश्यक है कि वह उसके वायदों पर अपने ध्यान को केन्द्रित करे न कि व्याखाओं पर (22:3-5)। कई बार परमेश्वर अपने लोगों से यह अपेक्षा रखते है कि वह बिना किसी व्याख्या के परीक्षाओं को पार करें। लेखक किसी ऐसे दिव्य कारण को प्रकाशित नहीं करता जो परमेश्वर ने अब्राहम को दी हो कि उसे क्यों इसहाक को बलिदान के रूप में चढ़ाना है; इस से ऐसा प्रतीत होता है कि कुलपति को परमेश्वर से ऐसी कोई व्याख्या प्राप्त ही नहीं हुई। यह परिस्थिति सदोम और अमोरा के विनाश की परिस्थिति के बिल्कुल विपरीत थी। जब कुलपति ने इन क्षेत्रों की तबाही के बारे में परमेश्वर से प्रश्न किया, परमेश्वर ने उसे कई बार भरोसा दिलाया कि वह किसी अनैतिक तरह से कार्य नहीं करेगा और न ही धर्मियों को अधर्मियों के सामान नष्ट करेगा (18:22-33)।

परमेश्वर, जीवन और सभी वस्तुओं के सृष्टिकर्ता के तौर पर, हमारे प्रश्नों का किसी भी रीति से जवाबदेही नहीं है। कायनात के सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर होने के नाते, वह बाध्य नहीं है कि वह अनैतिक, पापमय मनुष्य जाति को किसी भी बात की सफाई दे। फिर भी वह कई बार अपनी आज्ञा का कारण बहुत कठिन और गंभीर परीक्षा के समय में स्पष्ट कर देते है। उदाहरण के लिए, हम नूह की कहानी को देख सकते है: परमेश्वर ने नूह को बताया कि वह पृथ्वी पर एक भयंकर प्रलय भेजने वाले है, ताकि वह पूरे मानव जाति का विनाश कर सके उनकी बढ़ती दुष्टता और हिंसा के कारण। उन्होंने इस धार्मिक व्यक्ति को एक विशाल जहाज़ बनाने का निर्देश दिया ताकि वह और उसका परिवार इस आने वाली तबाही से बच सके (6:8-22)। इसी तरह, परमेश्वर ने मूसा को भी प्रकाशन दिया, और उसके द्वारा इस्राएलियों को, कि वह मिस्रियों पर विपत्तियों को भेजने वाला था, जिस के चलते वह उसके लोगों को बंधुवाई से छोड़ देगा (निर्गमन 6:1-9; 7:14-12:41)। अंतिम विपत्ति, जो कि पहलौठे की मृत्यु थी और पूरे देश में होने वाली थी, उससे बचने के लिए हर विश्वासी घर को अपने द्वार पर मेमने का लहू लगाना था। और फिर उन्हें उस जानवर को पक्का कर खाना था, ताकि वह यात्रा के लिए तैयार हो। और उन्हें सुबह तक अपने घरों के भीतर ही रहना था, जब तक कि विपत्ति चली न जाये।

अब इन सभी बातों की व्याख्या इस्राएलियों को करना इसलिए अनिवार्य था क्योंकि, चार सौ वर्ष के पश्चात, उन्हें अब्राहम, इसहाक और याकूब के

परमेश्वर के विषय में कुछ ही बातें याद थी। जिसके फलस्वरूप इब्री लोगों की आत्मिक प्रतिबद्धता एक सच्चे परमेश्वर के प्रति कम हो गयी, और वह मूर्तिपूजन और मिस्र के अन्य देवी देवताओं की उपासना में लग गए (यहोशू 24:14)। इसलिए परमेश्वर को चमत्कारी तरीकों से अपने लोगों को फ़िरौन के क्रोध से बचा कर वायदे के देश की ओर ले जाने की व्यवस्था स्वयं करनी पड़ी ताकि उनके चित पर प्रभाव डाल सके और उनके विश्वास को मज़बूत बना सके। इसी प्रकार से यहोवा अपने वाचा के वायदों को, जो उसने उनके पूर्वजों से, सदियों पहले किया था, पूरा करने के लिए निर्धारित किया।

अब्राहम को परमेश्वर की आज्ञा को देने का कारण जानने की आवश्यकता नहीं पड़ी क्योंकि इतने सालों में उसने परमेश्वर के साथ एक मज़बूत रिश्ता बना लिया था। उसने परमेश्वर की असीम आशीषों, कृपा और दया का अनुभव किया, और उसने परमेश्वर के वायदे, कि पृथ्वी की सभी जातियां उसके बीज (इसहाक) द्वारा आशीषित होंगी, उस पर भरोसा भी किया (17:19, 21; 18:9-14; 21:12)। क्योंकि उसका विश्वास इस दिव्य वायदे पर था, अब्राहम बिना किसी हिचकिचाहट के इसहाक को वेदी पर बलिदान करने के लिए तत्पर था (रोमियों 4:16, 20, 21)। सबसे अनोखी बात यह है कि वह अपने प्रिय पुत्र को भी मारने के लिए तैयार था बिना परमेश्वर के खिलाफ़ एक भी शब्द कहे; वह इस बलिदान को एक स्तुति के तौर पर करने को तत्पर था (22:5)।[18] कुलपति के मन में, परमेश्वर का वायदा निश्चित था जिसका अर्थ था कि वह इसहाक को मुर्दों में से जिलाएगा।

इसी तरह, यीशु मसीह का मुर्दों में से जीवित होना और परमेश्वर के वायदे का पूरा होना प्रेरितों के सुसमाचार का आदर था (प्रेरितों 13:32, 33), और सच्चे विश्वासियों के लिए अनंत जीवन का वायदा भी प्रत्याभूत किया गया (प्रेरितों 13:48)। यही कारण था की शुरुआती मसीही शहीदों ने परमेश्वर से व्याख्या नहीं माँगी; बल्कि, वह रोमी रणभूमि में, स्तुति करते और गीत गाते हुए शहीद हुए। वह जानते थे की मृत्यु अंतिम चरण नहीं हैं, जैसा की पौलुस ने कहा, "जीना मसीह और मरना लाभ है" (फिलि. 1:21)। जैसे यीशु का मृत्यु पर विजय प्राप्त कर-कर स्वर्गारोहण हुआ, वह विश्वास द्वारा जानते थे कि, उसके वायदे के अनुसार, उसके द्वारा वह भी उस महिमामय पुनरुत्थान का हिस्सा होंगे (1 थिस. 4:13-18; 1 यूहन्ना 2:25; 3:1-3)। इस प्रकार के विश्वास से ही इस "पृथ्वी पर" "वियज" प्राप्त किया जा सकता है (1 यूहन्ना 5:4, 5)।

परीक्षा के समय में, विश्वासियों को अपना ध्यान परमेश्वर द्वारा बनाये हुए प्रबंधों पर केन्द्रित करना चाहिए (22:6-14)। यह वाक्य दो बातों का अभिलेख करता है जो परीक्षा के महत्त्व को दर्शाती हैं। पहला, जब इसहाक ने आग और लकड़ी को देखा, उसने अपने पिता से कहा, "... परन्तु बलि के लिए भेड़ कहाँ है?" अब्राहम ने उत्तर दिया कि, "हे पुत्र, परमेश्वर आप ही होमबलि के लिए भेड़ का प्रबंध करेंगे" (22:7, 8)। वृद्ध कुलपति के जीवन के इस पड़ाव पर, उससे

परमेश्वर के दिखाए हुए रास्ते के अलावा और रास्ता दिख नहीं रहा था, और उसने उसकी योजना पर पूर्ण विश्वास किया। यह "विश्वास में छिपा हुआ था" (गला. 3:23); अगर अब्राहम परमेश्वर का जन बनना चाहता था तो, उसे इसहाक को बलिदान करना ही होगा और इस आज्ञा से वह किसी भी तरह भाग नहीं सकता।

जब मैं बालक था, मुझे "फन हाउस" जाना अत्याधिक पसंद था, जो कि एक मेले की तरह होता था, जिसमें गलियारों की भूलभुलैया भी होती थी। चलने का मार्ग अलग अलग दिशाओं में जाता था, आम-तौर पर जो बंद गली ही होती थी; और केवल एक ही मार्ग था जो निकास को जाता था। यह निराशा और मस्ती दोनों का ही कारण बनते थे, क्योंकि गलत मोड़ पर मुड़-मुड़ कर ही सही रास्ता मिलता था जो उस भूल भुलाया से बाहर निकलता था। अब्राहम ने भी अपने जीवन काल में कई गलत मोड़ लिए; और यह उसकी निराशा का कारण भी बने होंगे, किन्तु यह आनंद की बात नहीं थी। हर बार जब यह परमेश्वर की ओर अनाज्ञाकारिता को दिखाता था उसकी परिस्थिति और अधिक गंभीर और उलझ जाती थी। जैसे ही वो इस उत्तम परीक्षा की ओर बढ़ा, कुलपति ने ज़रूर विचार किया होगा की परमेश्वर के वह हुए रास्ते के अलावा और कोई रास्ता है या नहीं। उसने यह भी सोचा होगा कि, "यदि मैं अपने पुत्र को मार डालूँगा, क्या वह सभी भविष्य की आशाओं और दर्शनों का अंत ना होगा?" शायद उसने विचारपूर्वक यह भी सोचा हो कि, "परमेश्वर मेरे लिए कितना भला ठहरा है, और उसने मुझे कितनी आशीषों से भरा है - शारीरिक और आत्मिक रीति से - खासकर मुझे इसहाक को देकर, जो मेरे वायदा का पुत्र है! मैं कैसे उसकी आज्ञा न मान कर असफ़ल हो सकता हूँ?"

निश्चित तौर पर यह अब्राहम के जीवन की एक फ़ैसले की घड़ी थी। कोई भी मानवीय तर्क उसकी दुविधा को सुलझा नहीं सकता था। तर्क वितर्क की प्रक्रिया से, दोनों ही बातें, परमेश्वर की आज्ञा को माने या न माने गलत प्रतीत हो रहे थे। और उस निर्णायक क्षण में, उसने विश्वास के द्वार से प्रवेश किया। हालाँकि वह नहीं देख पा रहा था की द्वार के दूसरे तट पर क्या है, वह यह जनता था की परमेश्वर, जो अच्छा और न्यायी है, उसकी प्रतीक्षा इस बौद्धिक उलझन के निकास पर कर रहे थे। निश्चित तौर पर, उसका विश्वास *परमेश्वर पर भरोसा* था।

अब्राहम न सिर्फ़ विश्वास करता था कि यहोवा एक मात्र सच्चा परमेश्वर है, बल्कि उसे ये भी यकीन था कि "जो उसे सच्चाई के साथ खोजते हैं, वह उन्हें उसका प्रतिफल देता है" (इब्रा. 11:6)। कई वर्षों तक परमेश्वर के साथ चलने के कारण, कुलपति उन्हें अच्छे से जान गया था। वह परमेश्वर पर इतना भरोसा तो करता ही था की वह खुद से कह सके कि, "यदि मैं अपने पुत्र को मार भी डालूं, तब भी परमेश्वर उसे मुर्दों में से जिला कर अपने वायदे को पूरा करेगा" (देखें इब्रा. 11:19)।

हम नहीं जानते की शारीरिक पुनरुत्थान के विषय में अब्राहम की क्या जानकारी थी, क्योंकि उस समय बाइबल में इस विषय पर कोई विशिष्ट शिक्षा नहीं थी। परन्तु हम ये जानते है कि उस समय के लोगों को इस बात पर विश्वास था की मृत्यु के पश्चात् भी जीवन कायम रहता है। इसलिए वह अपने परिजनों के साथ मृत्यु के पश्चात् काम में आने वाली आवश्यक सामग्रीयों को भी दफ़नाया करते थे। एक तरह से, अब्राहम एक बार इसहाक को मरे हुओं में से जी उठते हुए देख चुका था; अपनी माता सारा की मरी हुई कोख से। इसलिए उसे पूर्ण विश्वास था की मोरिय्याह पहाड़ के इस बलि वेदी से परमेश्वर उसे दूसरी बार भी जिलायेगा।

इस ही विश्वास के साथ, कुलपति ने खंजर लिए, और जैसे कि परमेश्वर ने उसे आज्ञा दी थी, अपने पुत्र को बलिदान करने के लिए आगे बड़ा - लेकिन "परमेश्वर के स्वर्ग दूत" ने उसे रोका (22:11)। अब्राहम इस परिस्थिति से गुज़र सका क्योंकि उसका ध्यान परमेश्वर के वायदों और प्रावधानों पर केंद्रित था। जब उसके हाथ को बलि चढ़ाने से रोका गया, तब कुलपति ने ऊपर देखा और यह जाना कि परमेश्वर ने इसहाक के विकल्प में प्रदान कर दिया है। उसने एक "मेढ़ा" (नर भेड़) अपने सींगो से एक झाड़ी में बंधा हुआ है देखा (22:13)। और धन्यवाद से भरे हुए हृदय के साथ, अब्राहम ने उस स्थान का नाम "परमेश्वर उपाय करेगा" रखा। और मूसा इस बात को बताता है, कि उसके समय के लोग भी यह कहते थे की "यहोवा के पहाड़ पर उपाय किया जाएगा" (22:14)।

परमेश्वर, अब्राहम, इसहाक और मेढ़ा का यह पूरा उल्लेख, आलंकारिक प्रतीकात्मक[19]/प्रतिरूप है उस बात का, जो परमेश्वर ने, अपने प्रेम में होकर मनुष्य जाति के लिए यीशु के द्वारा गुलगुत्ता पर किया (यूहन्ना 3:16)। इस समानता को समझने के लिए, हमें यह जानना है की एक "प्रारूप" का "प्रतिरूप" से वही सम्बन्ध है जो कि एक सूट का उसके स्वरूप से है। एक सूट का अपने स्वरूप के साथ, जिससे वह बना है, सम्बन्ध है क्योंकि दोनों में स्वाभाविक समानताएं है। किन्तु दूसरे हाथ पर, वह बहुत अलग भी है क्योंकि वह दोनों ही अलग सामग्री से बने है। एक स्वरूप मात्र कुछ टुकड़ों का संग्रह हैं; जो सूट कैसा होगा उसका एक अधूरा पूर्व दर्शन दिखता है। सूट एक कीमती वस्त्र से, कारीगरी की पूर्ण सूक्ष्मता के साथ, बनाया जाता है जो अधिक टिकाऊ और मूल्यवान, स्वरूप से जिसे साधारण कागज़ से बनाया जाता है। इन्हीं सब विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए, प्रारूप/प्रतिरूप के सम्बन्ध को इसहाक के बाइबल उल्लेख में देख सकते हैं।

पहली समानता इसहाक और यीशु दोनों के चमत्कारी जन्म में देखी जा सकती है। इसहाक का जन्म परमेश्वर की दिव्य समर्थ के द्वारा संभव हुआ जिस ने अब्राहम और सारा के बूढ़े शरीरों को सबल बना कर प्रसव और प्रस्तुति के योग्य बनाया (रोमियों 4:18, 19)। महत्वपूर्ण अंतर यह है कि मरियम कुंवारी थी और

पवित्र आत्मा के द्वारा गर्भवती पाई गई; इसलिए यीशु का कोई शारीरिक पिता नहीं है (मत्ती 1:18, 25)।

दूसरी समानता यह है की परमेश्वर ने इसहाक के बलिदान के बदलें में मेढ़ा (नर भेड़) का प्रबंध किया, जिसने मरने के योग्य कोई काम न किया था; लेकिन उसके कारण वह जीवित जा सका। परमेश्वर ने यीशु मसीह ("परमेश्वर का मेमना"; यशा. 53:7; यूहन्ना 1:29) को उन पापियों के लिए जो मृत्यु के योग्य थे वैकल्पिक प्रायश्चित बलिदान के रूप में भेजा (रोमियों 3:23-25; 1 यूहन्ना 2:1, 2)। परमेश्वर के अनुग्रह से, वह जो चुनाव करते हैं इस बलिदान से लाभ उठाने का, वह अनन्त जीवन का अनुभव कर सकते हैं, जो पुत्र के द्वारा मिलता है (1 यूहन्ना 5:11)।

तीसरा पहलू इस प्रारूप/प्रतिरूप के सम्बन्ध में अद्वितीय है। अब्राहम ने इसहाक को बलि वेदी से हटा कर उस पर एक निर्दोष मेढ़ा मारने के लिए रख दिया, किन्तु परमेश्वर ने उससे भी अधिक बड़ा कार्य किया। उसने अपने आप को शरीर में ढाला और पृथ्वी पर यीशु के रूप में आए (यूहन्ना 1:14, 18; 14:8-11)। वह मनुष्यों के बीच में आए और एक निर्दोष जीवन व्यतीत किया और फिर सारी मानव जाती के पापों के लिए बलिदान की वेदी, जो कि क्रूस था, पर उनकी जगह ली (देखें इफि. 2:16; कुलु. 1:19, 20; इब्रा. 13:12; 1 पतरस 2:24)। निश्चित तौर पर क्रूस पर चढ़ना परमेश्वर के जीवन की एक घटना थी, क्योंकि वह मेलजोल के उस अनुभव में "यीशु मसीह में थे" (2 कुरि. 5:19, 21)। क्रूस, "दुनिया" को परमेश्वर की "श्रेष्ठ महानता" (इफि. 1:18-20) और सृष्टिकर्ता के पतित मानवता के प्रति प्रेम को दर्शाता है (यूहन्ना 3:16; 1 यूहन्ना 3:1)।

समाप्ति नोट्स

[1]जी. गेर्लेमन, "נסה," *थेओलोगिकल लेक्सिकॉन ऑफ़ द ओल्ड टेस्टामेंट* में, अनुवाद मार्क इ. बिद्द्ले, एड. एर्नस्ट जेनी एंड क्लाउस वेस्तेर्मन्न (पीबॉडी, मास.: हेन्द्रिककसन पब्लिशर्स, 1997), 2:741-42. [2]फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राईवर, और चार्ल्स ए. ब्रिगग्स, *ए हिब्रू एंड इंग्लिश लेक्सिकॉन ऑफ़ द ओल्ड टेस्टामेंट* (ऑक्सफ़ोर्ड: क्लेरेंडॉन प्रेस, 1962), 402. [3]मोनोगेनेस का नए नियम में सही अर्थ यह है। (वाल्टर बउएर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लेक्सिकॉन ऑफ़ द न्यू टेस्टामेंट एंड अदर अर्ली क्रिस्तियन लिटरेचर*, 3डी एड., रिव. एंड एड. फ्रेदेरिच्क विलियम डानकर [शिकागों: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागों प्रेस, 2000], 658.) युनानी शब्द के यीशु को लेकर और बेहतर अनुवाद के लिए, देखें यहुन्ना 1:14, 18; 3:16, 18; 1 यहुन्ना 4:9 (NIV; NRSV)। [4]मंदिर की चोटी और इसहाक के बलिदान के बीच के संघ के लिए, जोसेफूस *अन्तिक्वइतिएस* 7.13.4; *जुबिलीस* 18.13 देखें। [5]जी. लोएड कार, "יָחִיד", *TWOT* में, 2:666-68. [6]*जेनिसिस रब्बह* 56.3. [7]संभवतः यह एक जलती हुई मशाल या चमकता हुआ अंगारा था। [8]निमंलिखित की तुलना करें: "हे याकूब, हे याकूब" (46:2), "हे मूसा, हे मूसा!" (निर्गमन 3:4), "शमूएल, शमूएल!" (1 शमूएल 3:10), और "हे शाऊल, हे शाऊल" (प्रेरितों 9:4)। [9]22:2 पे दिए गए टिप्पणियों के मुताबिक, याचिद का अर्थ यह है कि इसहाक अब्राहम का "एकमात्र अद्वितीय पुत्र" था. [10]देखें 6:5, 6, परमेश्वर के हृदय की शोक और टूटापन, मनुष्य के दुष्टता के कारण, जो बाढ़ का कारण बना.

[11]"प्रकार" की परिभाषा, NASB में παραβολή *(पाराबोले)* से अनुवादित है, जिसको "दृष्टान्त" की तरह भी समझा जाता है। इसका अन्योक्ति रूप, NIV में "लाक्षणिक रूप" के द्वारा व्यक्त किया जाता हैं। [12]रिबका के परिवार ने भी ऐसी ही आशीष उसपे बोली 24:60 में। [13]एडविन सी. होस्तेत्टर, "बेथूएल (पर्सन)," *द एंकर बाइबिल डिक्शनरी*, एड. डेविड नोएल फ्रीदमन (न्यू यॉर्क: दौब्लेदय, 1992), 1:715. [14]एलन सी. मायरस, "कॉनकुबाईन," *द इंटरनेशनल स्तनदरद बाइबिल इनसाइक्लोपीडिया*, एड. गेओफ्फेरी डब्लू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मीच.: डब्लूएॅम. बी. ईरदमैनस पब्लिकेशन को., 1979), 1:758. [15]केनेथ ए. मथेव्स, *जेनेसिस 11:27-50:26*, द अमेरिकन कमेंटरी, वोल. 1बी (नश्विल्ले: ब्रॉडमैन & होलमैन पब्लिशर्स, 2005), 310. [16]जो इब्री शब्द נָסָה *(नसाह)* है और युनानी अनुरूप πειράζω *(पिराझो)* है [17]प्राचीन समय के ज्ञानी पित्तंत्रात्मक युग को "स्टारलाइट युग" भी कहते थे, मोसाइक युग को "मूनलाइट युग," और ईसाई एरा को "ट्वाईलाईट युग" भी कहते थे। (एलेग्जेंडर कैम्पबेल, "द ज्यूइश एज - नॉ. XIV: द मिनिस्ट्री ऑफ़ जॉन," इन *द ब्रीतियन बैप्टिस्ट* 7 [3 मई 1830]: 222.) [18]व्यक्ति कैसा महसूस करता है, स्तुति यह बात नहीं है; यह एक निर्णय है जो व्यक्ति लेता है परमेश्वर को महिमा देने और उसका आदर करने के लिए, अपने व्यक्तिगत भावनाओ को परे रख कर (आयूब 1:20, 21 देखें) [19]NASB "चिन्ह" और "प्ररूप" शब्दों के प्रयोग इब्रानियों 9:9; 11:19 में करती हैं, παραβολή (*पराबोले*, "दृष्टान्त"), का अनुवाद करने के लिए (देखें बउएर, 759)।